कक्षा–12
विषय–हिन्दी
(प्रश्नमाला)

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न</u>

प्र0–1 निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें–

1. आधुनिक काल को 'गद्यकाल' किसने कहा है?

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (घ) श्यामसुन्दर दास

2. 'उक्ति–व्यक्ति प्रकरण' रचना है–

(क) सदासुख लाल (ख) कवि गंग

(ग) दामोदर शर्मा (घ) लल्लू लाल

3. 'कविवचन सुधा' पत्रिका के सम्पादक हैं–

(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(ग) प्रताप नारायण मिश्र (घ) श्यामसुन्दर दास

4. 'फोर्ट विलियम' कालेज की स्थापना हुई–

(क) 1808 ई0 (ख) 1800 ई0

(ग) 1801 ई0 (घ) 1900 ई0

5. 'भारत दुर्दशा' नाटक के रचयिता है–

(क) पं0 बालकृष्ण भट्‍ट (ख) प्रतापनारायण मिश्र

(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) जयशंकर प्रसाद

6. हिन्दी की प्रथम आधुनिक कहानी है–

(क) ग्यारह वर्ष का समय (ख) आकाशदीप

(ग) रानी केतकी की कहानी (घ) इन्दुमती

7. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने क्या किया?

(क) साहित्य के इतिहास लेखन का कार्य
(ख) कविवचन सुधा का सम्पादन
(ग) ब्रजभाषा का प्रयोग
(घ) भाषा–परिमार्जन

8. छायावाद युग की समय सीमा है–

(क) 1900 ई0 से 1918 ई0 तक
(ख) 1918 ई0 से 1938 ई0 तक
(ग) 1938 ई0 से अब तक
(घ) 1968 ई0 से 1900 ई0 तक

9. प्रेमचन्द्र की रचना है–

(क) ध्रुवस्वामिनी
(ख) प्रतिशोध
(ग) कंकाल
(घ) गोदान

10. हिन्दी की प्रथम एकाकी है–

(क) प्रथ्वीराज की आँखे
(ख) एक घूँट
(ग) अंधेर नगरी
(घ) भारत दुर्दशा

11. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है–

(क) चन्द्रकान्ता
(ख) परीक्षा गुरू
(ग) नूतन ब्रह्मचारी
(घ) तितली

12. हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है–

(क) सेवासदन
(ख) बाणभटट् की आत्मकथा
(ग) चिन्तामणि
(घ) कंकाल

13. निम्नलिखित में से कोई एक कथन सत्य है, पहचानकर लिखिए–

(क) 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद की रचना है।
(ख) 'गोदान' प्रताप नारायण मिश्र की रचना है।

(ग) 'हंस' पत्रिका के सम्पादक जयशंकर प्रसाद है। (घ) 'रंगभूमि' उपन्यास जैनेन्द्र का है।

14. 'राग दरबारी' किस विद्या की रचना है–

(क) नाटक (ख) उपन्यास

(ग) आत्मकथा (घ) जीवनी

15. 'निन्दा रस' निबन्ध के रचनाकार है–

(क) हरिशंकर परसाई (ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ग) रामचन्द्र शुक्ल (घ) जैनेन्द्र कुमार

16. 'वर्ण रत्नाकर' किस भाषा में है?

(क) खड़ी बोली (ख) भोजपुरी

(ग) मैथिली (घ) ब्रजभाषा

17. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका के सम्पादक थे–

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) बालकृष्ट भट्ट

(ग) श्यामसुन्दर दास (घ) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

18. रेखाचित्र पर आधारित रचना है–

(क) मुद्राराक्षस (ख) साहित्यालोचन

(ग) अतीत के चलचित्र (घ) क्या भूलूँ क्या याद करूँ

19. परख, सुनीता एवं सुखदा जैसे सुप्रसिद्ध उपन्यासों की रचना किसके द्वारा की गयी है?

(क) श्रीलाल शुक्ल द्वारा (ख) जैनेन्द्र कुमार द्वारा

(ग) प्रेमचन्द्र द्वारा (घ) धर्मवीर भारती द्वारा

20. 'क्षण बोले कण मुस्काए' निबन्ध के रचयिता हैं–

(क) कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर (ख) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) विद्यानिवास मिश्र (घ) रामचन्द्र शुक्ल

21. 'कबीर' आलोचना ग्रन्थ है–

(क) रामचन्द्र शुक्ल (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) रामकुमार वर्मा (घ) प्रेमचन्द्र

22. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के लेखक हैं–

(क) श्यामसुन्दर दास (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) मोहन राकेश (घ) हरिशंकर परसाई

23. 'कुटज' निबन्ध के रचनाकार हैं–

(क) रामचन्द्र शुक्ल (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) अज्ञेय (घ) मोहन राकेश

24. 'अशोक के फूल' के रचनाकार हैं–

(क) विद्यानिवास मिश्र (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) प्रतापनारायण मिश्र

25. 'आलोक पर्व' किस लेखक की कृति है?

(क) गुलाबराय (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी

26. 'एकात्म मानववाद' के लेखक हैं–

(क) अज्ञेय (ख) पं0 दीनदयाल उपाध्याय

(ग) इलाचन्द्र जोशी (घ) रायकृष्ण दास

27. 'माता भूमिः पुत्रोअहं पृथिव्याः।' किस पाठ से लिया गया है–

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) वासुदेव शरण अग्रवाल

(ग) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (घ) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

28. भारतेन्दु यग के निबन्धकार है–

(क) किशोरी लाल गोस्वामी (ख) प्रतापनारायण मिश्र

(ग) जैनेन्द्र कुमार (घ) धर्मवीर भारती

29. 'कलम का सिपाही' के रचनाकार हैं–

(क) धीरेन्द्र वर्मा (ख) अमृत राय

(ग) प्रेमचन्द्र (घ) रामचन्द्र शुक्ल

30. सज्जन, कल्याणी परिणय, अजातशत्रु नाटक है–

(क) राजकुमार वर्मा (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) लक्ष्मी नारायण मिश्र (घ) हरिकृष्ण प्रेमी

31. उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है–

(क) यथार्थ चित्रण (ख) सामने रखना

(ग) प्रकट करना (घ) वर्णन करना

32. 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है–

(क) रेखाचित्र (ख) यात्रावृत्त

(ग) संस्मरण (घ) आत्मकथा

33. 'गेहूँ और गुलाब', 'माटी की मूरतें' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास (ख) रेखाचित्र

(ग) नाटक (घ) कहानी

34. 'डायरी' लेखन के पर्यायवाची शब्द हैं–

(क) परिचर्चा (ख) दैनिकी, दैनान्दिनी

(ग) भेंटवाता (घ) विशेष परिचर्चा

35. 'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' उल्लेखनीय पत्र संकलन है–

(क) बनारसी दास चतुर्वेदी (ख) हरिवंश राय बच्चन

(ग) डॉ0 बच्चन (घ) मोहन राकेश

36. निम्नलिखित से भारतेन्द्र पूर्व का लेखक नहीं है–

(क) शिव प्रसाद सितारे 'हिन्द' (ख) यशपाल

(ग) लक्ष्मण सिंह (घ) इंशा अल्ला खाँ

37. 'भाषा और आधुनिकता' निबन्ध के लेखक है–

(क) रामचन्द्र शुक्ल (ख) प्रो0 जी0 सुन्दर रेड्डी

(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) हरिशंकर परसाई

38. 'काशी नागरी प्रचारिणी' सभा की स्थापना किसने की है?

(क) श्यामसुन्दर दास (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) अज्ञेय

39. हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना है–

(क) चिन्तामणि (ख) अशोक के फूल

(ग) सेवासदन (घ) रंगभूमि

40. आदिकाल का ग्रन्थ नहीं है–

(क) पृथ्वीराज चौहान (ख) सूरसागर

(ग) सन्देश रासक (घ) परमाल रासो

41. भारतेन्दु युग के लेखक नहीं है–

(क) प्रतापनारायण मिश्र (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

42. 'निन्दा रस' निबन्ध के लेखक हैं–

(क) रामचन्द्र शुक्ल (ख) हरिशंकर परसाई

(ग) जैनेन्द्र (घ) अज्ञेय

43. 'भूत के पाँव पीछे', 'पगडण्डियों का जमाना' रचना है–

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) हरिशंकर परसाई

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) श्याम सुन्दर दास

44. हिन्दी के साहित्य–इतिहास के लेखक है–

(क) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ख) प्रतापनारायण मिश्र

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) प्रेमचन्द्र

45. सन् 2002 में भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति बनें–

(क) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम (ख) मोहन राकेश

(ग) श्रीलाल शुक्ल (घ) डॉ0 के0आर0 नारायणन

46. 'विजन–2020' किसकी रचना है–

(क) फणीश्वर नाथ 'रेणु' (ख) डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम

(ग) पं0 दीनदायाल उपाध्याय (घ) निर्मल वर्मा

47. 'पाजेब', 'एक रात', 'मास्टर जी' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास (ख) कहानी

(ग) नाटक (घ) संस्मरण

48. 'झरोखे', 'कड़ियाँ', 'तमस' किसके द्वारा रचित उपन्यास है–

(क) मोहन राकेश द्वारा (ख) भीष्म साहनी द्वारा

(ग) निर्मल वर्मा द्वारा (घ) शिवानी द्वारा

49. 'वीरगाथा काल' के कवि है–

(क) केशवदास (ख) चन्दवरदाई

(ग) महादेवी वर्मा (घ) जयशंकर प्रसाद

50. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' किस विधा की रचना है–

(क) आत्मकथा (ख) उपन्यास

(ग) कहानी (घ) संस्मरण

51. 'भाग्यवती' उपन्यास के लेखक है–

(क) इंशा अल्ला खाँ (ख) श्रद्धाराम फुल्लौरी

(ग) लाला श्रीनिवास दास (घ) प्रेमचन्द्र

52. प्रेमचन्द्र किस रचना के लेखक नहीं है–

(क) कफन (ख) पंच परमेश्वर

(ग) नमक का दरोगा (घ) ममता

53. हिन्दी की प्रथम कहानी है–

(क) पूस की रात (ख) आत्माराम

(ग) इन्दुमती (घ) पंच परमेश्वर

54. 'गोरा बादल की कथा' के लेखक हैं–

(क) कमलेश्वर (ख) उसने कहा था

(ग) ध्रुवस्वामिनी (घ) गोदान

55. कौन सी रचना कहानी है–

(क) तितली (ख) उसने कहा था

(ग) ध्रुवस्वामिनी (घ) गोदान

56. 'आकाशदीप' कहानी है–

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) मोहन राकेश

(ग) प्रेमचन्द्र (घ) महादेवी वर्मा

57. निबन्ध विधा का प्रारम्भ किस युग में हुआ–

(क) द्विवेदी युग (ख) भारतेन्दु युग

(ग) छायावाद युग (घ) छायावादोत्तर युग

58. 'संस्कृति के चार अध्याय' के लेखक है–

(क) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) सरदार पूर्ण सिंह

59. 'चिन्तामणि' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास (ख) निबन्ध

(ग) एकांकी (घ) आत्मकथा

60 'वसीयत' किस विधा की रचना है–

(क) यात्रावृत्त (ख) समालोचना

(ग) कहानी (घ) संस्करण

61. निम्नलिखित रचनाओं में कौन सी रचना 'रेखाचित्र' है–

(क) अतीत के चलचित्र (ख) चित्रलेखा

(ग) विचार प्रवाह (घ) चन्द्रगुप्त

62. आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय है–

(क) मिश्रबन्धु (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) अज्ञेय

63. 'कुटज' किस विधा की रचना है—

(क) निबन्ध (ख) आलोचना

(ग) संस्मरण (घ) रेखाचित्र

64. हिन्दी एकांकी का जनक माना जाता है—

(क) मोहन राकेश (ख) भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र

(ग) डॉ0 रामकुमार वर्मा (घ) बालकृष्ण भट्ट

65. निम्नलिखित में से कौन सी रचना भारतेन्दु की है—

(क) ध्रुवस्वामिनी (ख) भारत दुर्दशा

(ग) चन्द्रगुप्त (घ) स्कन्दगुप्त

66. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी है—

(क) डॉ0 रामकुमार वर्मा (ख) उपेन्द्र नाथ अश्क

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) यशपाल

67. 'नूतन ब्रह्मचारी' किस विधा की रचना है—

(क) जीवनी (ख) उपन्यास

(ग) आत्मकथा (घ) नाटक

68. 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास के लेखक हैं—

(क) लाला श्रीनिवास दास (ख) देवकीनन्दन खत्री

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) प्रेमचन्द्र

69. प्रेमचन्द्र के समकालीन उपन्यासकार हैं—

(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) श्रीलाल शुक्ल (घ) मोहन राकेश

70. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र किसके लेखक हैं–

(क) जिन्दगी और जोंक (ख) अंधेर नगरी

(ग) काले उजले दिन (घ) राग दरबारी

71. 'हरिऔध' का पूरा नाम क्या है–

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(ग) हजारी प्रसाद हरिऔध (घ) नागार्जुन प्रसाद हरिऔध

72. हिन्दी का प्रथम नाटक है–

(क) कामना (ख) नहुष

(ग) एक घूँट (घ) नल–दमयन्ती

73. भारतीय आचार्यों के अनुसार नाटक के तत्वों की संख्या है–

(क) आठ (ख) पाँच

(ग) सात (घ) ग्यारह

74. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–

(क) रामचन्द्र शुक्ल (ख) इंशा अल्ला खाँ

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) धर्मवारी भारती

75. 'ग्यारह वर्ष का समय' कहानी के लेखक हैं–

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) प्रेमचन्द्र (घ) अज्ञेय

76. खड़ीबोली गद्य का उन्नायक कौन है–

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) मुंशी सदासुख लाल

(ग) रामचन्द्र शुक्ल (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

77. वर्तमान युग में हिन्दी गद्य से क्या तात्पर्य है–

(क) अवधी (ख) खड़ीबोली

(ग) ब्रजभाषा (घ) राजस्थानी

78. हिन्दी गद्य की विधा नहीं है–

(क) निबन्ध (ख) खण्डकाव्य

(ग) कहानी (घ) आलोचना

79. आधुनिक काल को 'गद्यकाल' के नाम से किसने अभिहित किया है–

(क) हजारी प्रसाद द्विवेदी (ख) रामचन्द्र शुक्ल

(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) रामधारी सिंह 'दिनकर'

80. 'भाषा–योगवशिष्ठ' के रचयिता हैं–

(क) लल्लू लाल (ख) राम प्रसाद निरंजनी

(ग) सदल मिश्र (घ) राजा लक्ष्मण सिंह

81. खड़ीबोली गद्य का व्यवस्थित विकास कब से हुआ–

(क) अठारहवीं शताब्दी (ख) उन्नीसवीं शताब्दी

(ग) इक्कीसवीं शताब्दी (घ) सत्रहवीं शताब्दी

82. 'अरे यायावर रहेगा याद' किस विधा की रचना है–

(क) संस्मरण (ख) यात्रावृत्त

(ग) आत्मकथा (घ) रेखाचित्र

83. 'मेरा परिवार' किस विधा की रचना है–

(क) रेखाचित्र (ख) संस्मरण

(ग) जीवनी (घ) रिपोतार्ज

84. हिन्दी का प्रथम यात्रावृत्त है–

(क) कलम का सिपाही (ख) सरयू पार की यात्रा

(ग) परीक्षा–गुरू (घ) पथ के साथी

85. 'विषकन्या, अपराधिनी, पुष्पहार' कहानी संग्रह हैं–

(क) जैनेन्द्र (ख) शिवप्रसाद सिंह

(ग) अज्ञेय (घ) धर्मवीर भारती

86. अमरकान्त का जन्म किस सन् में हुआ?

(क) सन् 1922 ई0 में (ख) सन् 1925 ई0 में

(ग) सन् 1920 ई0 में (घ) सन् 1930 ई0 में

87. कर्मनाशा की हार, मुरदा सराय तथा भेड़िए कहानी संग्रह है–

(क) जैनेन्द्र (ख) शिवप्रसाद सिंह

(ग) अज्ञेय (घ) धर्मवीर भारती

88. अलग–अलग वैतरणी, गली आगे मुड़ती है, किस विधा की रचना है–

(क) कहानी (ख) उपन्यास

(ग) नाटक (घ) आत्मकथा

89. उसने कहा था, सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा कहानी है–

(क) जी0पी0 श्रीवास्तव (ख) चन्द्रधर्म शर्मा गुलेरी

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) प्रेमचन्द्र

90. विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, शरणार्थी, कहानी संग्रह है–

(क) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' (ख) प्रेमचन्द्र

(ग) जैनेन्द्र (घ) इलाचन्द्र जोशी

91. ध्रुवयात्रा कहानी है–

(क) ममता कालिया (ख) जैनेन्द्र कुमार

(ग) कृष्णा सोवती (घ) फणीश्वर नाथ रेणु

92. निम्नलिखित में से कौन सी रचना 'कहानी' संग्रह है–

(क) पूस की रात (ख) कुटज

(ग) कुहासा और किरण (घ) रॉवर्ट नर्सिंग होम में

93. आधुनिक काल की महिला कहानीकार हैं–

(क) महादेवी वर्मा (ख) सरोजिनी

(ग) मन्नू भंडारी (घ) शकुन्तला

94. 'आवारा मसीहा' रचना के लेखक हैं–

(क) अमृत राय (ख) विष्णु प्रभाकर

(ग) भैरव प्रसाद गुप्त (घ) नागार्जुन

95. 'भूदान यज्ञ' के लेखक हैं–

(क) डॉ0 नगेन्द्र (ख) विनोबा भावे

(ग) जैनेन्द्र कुमार (घ) मोहन राकेश

96. 'हंस' के सम्पादक थे–

(क) वासुदेव शरण अग्रवाल (ख) श्यामसुन्दर दास

(ग) बालमुकुन्द गुप्त (घ) प्रेमचन्द्र

97. चाँद, प्रभा और प्रताप पत्रिकाएँ किस युग से सम्बन्धित है–

(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग

(ग) शुक्ल युग (घ) शुक्लोत्तर युग

98. हिन्दी के प्रचारार्थ 'बनारस अखबार' का प्रकाशन किसने किया–

(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) राजा शिवप्रसाद सिंह

(ग) लक्ष्मण सिंह (घ) सदासुख लाल

99. 'साहित्य–सन्देश' पत्रिका के सम्पादक हैं–

(क) रायकृष्ण दास (ख) गुलाबराय

(ग) अज्ञेय (घ) महादेवी वर्मा

100. 'पुरस्कार' कहानी के लेखक हैं–

(क) प्रेमचन्द्र (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) निर्मल वर्मा (घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्र0–2 निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन करें–

1. 'अहं ब्रम्हास्मि' कहानी के लेखक हैं–

(क) भगवती चरण वर्मा (ख) भीष्म साहनी

(ग) यशपाल (घ) जैनेन्द्र कुमार

2. 'गोदान' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास (ख) नाटक

(ग) आत्मकथा (घ) डायरी

3. आंचलिक उपन्यासकार है–

(क) जैनेन्द्र कुमार (ख) फणीश्वरनाथ रेणु

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) अज्ञेय

4. 'अनामदास का पोथा', 'चारू–चन्द्र लेख' किस विधा की रचना है–

(क) उपन्यास (ख) कविता

(ग) नाटक (घ) आत्मकथा

5. काव्य कितने प्रकार के होते हैं—

(क) चार प्रकार के (ख) दो प्रकार के

(ग) तीन प्रकार के (घ) सात प्रकार के

6. नाटक, एकांकी है—

(क) दृश्य काव्य (ख) श्रव्य काव्य

(ग) प्रबन्ध काव्य (घ) मुक्तक काव्य

7. रामचरित मानस, कामायनी, जयद्रथ वध, हल्दी घाटी हैं—

(क) मुक्तक काव्य (ख) प्रबन्ध काव्य

(ग) खण्ड काव्य (घ) दृश्य काव्य

8. प्रबन्ध काव्य कितने प्रकार के होते हैं—

(क) चार (ख) दो

(ग) सातृ (घ) नौ

9. चन्दबरदाई कृत हिन्दी का प्राचीनतम महाकाव्य है—

(क) पृथ्वीराज रासो (ख) वीसलदेव

(ग) प्रियप्रवास (घ) कामायनी

10. पद्मावत महाकाव्य है—

(क) जायसी (ख) चन्दवरदाई

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) जटमल

11. भिक्षु, दीन, वह तोड़ती पत्थर किसकी रचना है—

(क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (ख) महादेवी वर्मा

(ग) सुमित्रानन्दन पंत (घ) जयशंकर प्रसाद

12. तारसप्तक की रचनाएँ किस श्रेणी में आती हैं–

(क) खण्डकाव्य श्रेणी में (ख) मुक्तक श्रेणी में

(ग) प्रबन्ध काव्य की श्रेणी में (घ) महाकाव्य की श्रेणी में

13. आदिकाल को और किस नाम से अभिहित किया जाता है–

(क) वीरगाथा काल (ख) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

14. आदिकाल की समय–सीमा है–

(क) सन् 743 ई0 से 1342 ई0 तक (ख) सन् 1643 ई0 से 1943 ई0 तक

(ग) सन् 755 ई0 से 1343 ई0 तक (घ) सन् 765 ई0 से 1343 ई0 तक

15. अधिकांश विद्वान हिन्दी का प्रथम कवि मानते हैं–

(क) चन्दवरदाई (ख) सरहपा

(ग) बालकृष्ण भट्ट (घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

16. 'पृथ्वीराज रासो' में किस रस की प्रधानता है–

(क) श्रृंगार और शान्त रस (ख) श्रृंगार और वीर रस

(ग) श्रृंगार और करूण रस (घ) श्रृंगार और हास्य रस

17. 'श्रावकाचार' रचना है–

(क) मुनिजिनविजय (ख) देवसेन की

(ग) सरहपा (घ) दलपत विजय

18. वीरगाथा काव्य की विशेषता है–

(क) स्वर्ण–युग (ख) प्रकृति चित्रण

(ग) युद्धों का सजीव चित्रण (घ) मुक्त काव्य रचना

19. नरपति नाल्ह ने लिखा है–

(क) सन्देश रासक (ख) वीसलदेव रासो

(ग) खुमान रासो (घ) पदावली

20. हिन्दी के प्रथम कवि सरहपा किस वर्ग के कवि थे–

(क) नाथ साहित्य (ख) सिद्ध साहित्य

(ग) जैन साहित्य (घ) रासो साहित्य

21. निम्नलिखित में से कौन ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि नहीं हैं–

(क) नानक (ख) दादू

(ग) केशव (घ) मलूकदास

22. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रन्थ रासो परम्परा का श्रेष्ठ महाकाव्य है–

(क) खुमान रासो (ख) पृथ्वीराज रासो

(ग) परमाल रासो (घ) वीसलदेव रासो

23. वीरगाथा काल के कवि हैं–

(क) सूरदास (ख) भूषण

(ग) चन्दवरदाई (घ) केशव

24. निम्नलिखित में से कौन आदिकाल के कवि नहीं हैं–

(क) शारंगधर (ख) सुमित्रानन्दन पन्त

(ग) जगनिक (घ) चन्दवरदाई

25. निम्नलिखित में से कौन सी रचना भक्तिकाल में लिखी गई है–

(क) कामायनी (ख) सूरसागर

(ग) भारत–भारती (घ) साकेत

26. काव्य साहित्य में कौन सा काल स्वर्ण–काल कहलाता है–

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल

27. भक्तिकाल की रचनाओं में निम्नलिखित में से कौन सबसे अधिक लोकप्रिय है–

(क) पद्मावत (ख) रामचरितमानस

(ग) विनयपत्रिका (घ) सूरसागर

28. निम्नलिखित में से भक्तिकाल का महाकाव्य है–

(क) साकेत (ख) श्री रामचरितमानस

(ग) प्रियप्रवास (घ) राम की शक्ति पूजा

29. निम्नलिखित में से कौन प्रेमाश्रय शाखा के कवि नहीं हैं–

(क) जायसी (ख) सूरदास

(ग) मंझन (घ) कुतुबन

30. निम्नांकित में रामभक्ति शाखा के कौन नहीं है–

(क) तुलसीदास (ख) चतुर्भुजदास

(ग) अग्रदास (घ) नाभादास

31. किस कवि को बाल–वर्णन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है–

(क) तुलसीदास (ख) सूरदास

(ग) बिहारी (घ) केशवदास

32. सूफी काव्यधारा के कवि हैं–

(क) नानक (ख) जायसी

(ग) रैदास (घ) कबीर

33. बल्लभाचार्य के शिष्य हैं–

(क) भूषण (ख) कृष्णदास

(ग) भिखारी दास (घ) महादेवी वर्मा

34. कृष्णभक्ति काव्यधारा के अन्तर्गत आते हैं–

(क) ब्रजभाषा के कवि (ख) अष्टछाप के कवि

(ग) भक्तिकाल के कवि (घ) सभी श्रृंगारिक रचनाकार

35. सगुण भक्ति शाखा के कवि नहीं हैं–

(क) सूरदास (ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(ग) तुलसीदास (घ) मीराबाई

36. रीतिकाल से सम्बन्धित विशेषता है–

(क) सख्य भाव की भक्ति की प्रधानता (ख) समन्वयकारी भावना

(ग) नारी सौन्दर्य का विलासितापूर्ण चित्रण (घ) भक्ति की प्रधानता

37. 'कठिन काव्य के प्रेत' कहे जाते हैं–

(क) घनानन्द (ख) भूषण

(ग) सेनापति (घ) केशवदास

38. रीतिमुक्त कवि हैं–

(क) घनानन्द (ख) बिहारी

(ग) केशवदास (घ) भूषण

39. निम्नलिखित में से कौन सी कृति रीतिकाल में लिखी गई हैं–

(क) विनयपत्रिका (ख) कवितावली

(ग) गीतावली (घ) बिहारी सतसई

40. रीतिकाल की निम्नलिखित प्रमुख प्रवृत्तियों में से कौन–सी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है–

(क) राज–प्रशस्ति (ख) श्रृंगारिकता

(ग) रीति–निरुपण (घ) नीति

41. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम उल्लेखनीय है–

(क) गद्य साहित्य में (ख) काव्य में

(ग) संस्मरण में (घ) कहानी में

42. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कौन सी पत्रिका प्रकाशित की थी–

(क) कविवचन सुधा (ख) हंस

(ग) मर्यादा (घ) सरस्वती

43. द्विवेदी युग की रचना है–

(क) प्रियप्रवास (ख) कामायनी

(ग) साकेत (घ) प्रियप्रवास

44. मैथिलीशरण गुप्त आधुनिककाल के किस युग से सम्बन्धित हैं–

(क) भारतेन्दु युग (ख) द्विवेदी युग

(ग) छायावादी युग (घ) छायावादोत्तर युग

45. नई कविता की आधारभूत विशेषता है–

(क) मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव (ख) वह किसी भी दर्शन के साथ बँधी हुई नहीं है।

(ग) प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण (घ) रहस्यवादी भावना

46. छायावादी कवि कौन है?

(क) कबीर दास (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) सूरदास (घ) तुलसीदास

47. निम्नलिखित में से कौन–सी रचना छायावाद युग में लिखी गयी है–

(क) विनय पत्रिका (ख) आँसू

(ग) सूरदास (घ) तुलसीदास

48. तारसप्तक का प्रकाशन वर्ष है–

(क) सन् 1942 ई0 में (ख) सन् 1943 ई0 में

(ग) सन् 1954 ई0 में (घ) सन् 1955 ई0 में

49. निम्नलिखित में से प्रयोगवादी कवि हैं–

(क) अज्ञेय (ख) महादेवी वर्मा

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) केशवदास

50. प्रगतिशील 'लेखक संघ' की स्थापना हुई–

(क) सन् 1936 ई0 में (ख) सन् 1937 ई0 में

(ग) सन् 1942 ई0 में (घ) सन् 1938 ई0 में

51. प्रकृति के सुकुमार कवि कहलाते हैं–

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) सुमित्रानन्दन पंत

(ग) महादेवी वर्मा (घ) सेनापति

52. नौका विहार, परिवर्तन, बापू के प्रति कविता है–

(क) सुमित्रानन्दन पंत (ख) मैथिलीशरण गुप्त

(ग) धर्मवीर भारती (घ) निराला

53. कौन सा अलंकार छायावाद की देन है–

(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण

(ग) अनुप्रास (घ) यमक

54. प्रगतिवादी कवि है–

(क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) अज्ञेय (घ) सूरदास

55. प्रयोगवाद की विशेषता है–

(क) कल्पनाशीलता (ख) नवीनता के प्रति आग्रह

(ग) रहस्यवाद (घ) मानवीकरण

56. तारसप्तक के प्रवर्तक है–

(क) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' (ख) घनानन्द

(ग) धर्मवीर भारती (घ) केदारनाथ सिंह

57. 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित तारसप्तकों की संख्या है–

(क) पाँच (ख) तीन

(ग) सात (घ) नौ

58. उद्धव प्रसंग, गंगावतरण कविता है–

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सूरदास

59. रीतिकाल का अन्य नाम है–

(क) श्रृंगारकाल (ख) चारणकाल

(ग) स्वर्णकाल (घ) उद्भवकाल

60. 'आदिकाल' को 'वीजवपनकाल' नाम दिया है–

(क) रामचन्द्र शुक्ल ने (ख) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के

(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) डॉ0 रामकुमार वर्मा

61. आदिकाल का ग्रन्थ नहीं है–

(क) वीसलदेव रासो (ख) पृथ्वीराज रासो

(ग) संदेश रासक (घ) पद्‌मावत

62. 'आल्हखण्ड' का दूसरा नाम है–

(क) खुमाण रासो (ख) परमाल रासो

(ग) पृथ्वीराज रासो (घ) हम्मीर रासो

63. 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम तरंग', प्रेम सरोवर किसकी रचना है–

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) बिहारी

64. 'पूर्णप्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' किस विधा की रचना है–

(क) कविता (ख) उपन्यास

(ग) कहानी (घ) नाटक

65. 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' की रचना है–

(क) नाटक (ख) उपन्यास

(ग) संस्मरण (घ) रेखाचित्र

66. रस कलश, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे तथा चुभते चौपदे किसकी रचना है?

(क) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) माखनलाल चतुर्वेदी

67. 'श्रीरामचरित मानस' के पश्चात् हिन्दी में 'रास–काव्य' दूसरा ग्रन्थ कौन सा है?

(क) रामचन्द्रिका (ख) साकेत

(ग) विनयपत्रिका (घ) यशोधरा

68. मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है–

(क) साकेत (ख) लोकायतन

(ग) आँसू (घ) उत्तरा

69. भारत–भारती लिखने वाले कवि हैं–

(क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) अज्ञेय

(ग) बिहारी (घ) महादेवी वर्मा

70. 'अनघ' और 'नहुष' की रचना करने वाले कवि हैं–

(क) जयशंकर प्रसाद (ख) मैथिलीशरण गुप्त

(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) रामधारी सिंह 'दिनकर'

71. 'साकेत' महाकाव्य पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने कौन सा पुरस्कार प्रदान किया है–

(क) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ख) मंगला प्रसाद पारितोषिक

(ग) डी0लिट्0 उपाधि (घ) साहित्य अकादमी पुरस्कार

72. 'चित्राधार' के रचयिता हैं–

(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) जयशंकर प्रसाद

(ग) बिहारी (घ) मैथिलीशरण गुप्त

73. 'अणिमा' के रचनाकार हैं–

(क) नागार्जुन (ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' (घ) अज्ञेय

74. 'गीतिका' के कवि हैं–

(क) नरेन्द्र शर्मा (ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) महादेवी वर्मा

75. 'कला और बूढ़ा चाँद' के रचनाकार हैं–
(क) सुमित्रानन्दन पन्त (ख) अज्ञेय
(ग) निराला (घ) केदारनाथ सिंह

76. 'युगपथ' और 'उत्तरा' काव्यग्रन्थ के रचनाकार हैं–
(क) धर्मवीर भारती (ख) सुमित्रानन्दन पंत
(ग) सेनापति (घ) जयशंकर प्रसाद

77. 'लोकायतन' के कवि हैं–
(क) महादेवी वर्मा (ख) सुमित्रानन्दन पन्त
(ग) मुक्तिबोध (घ) भवानी प्रसाद मिश्र

78. 'शुद्ध कविता की खोज' किस विधा की रचना है–
(क) उपन्यास (ख) आलोचना ग्रन्थ
(ग) कविता (घ) नाटक

79. 'संस्कृति के चार अध्याय', 'भारतीय संस्कृति की एकता' किसकी कृति है–
(क) रामधारी सिंह 'दिनकर' (ख) मैथिलीशरण गुप्त
(ग) महावीर प्रसाद द्विवेदी (घ) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

80. रेणुका, कुरूक्षेत्र, हुंकार, उर्वशी काव्य रचना हैं–
(क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ख) रामधारी सिंह 'दिनकर'
(ग) अज्ञेय (घ) जैनेन्द्र कुमार

81. रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना है–

(क) यामा (ख) कुरुक्षेत्र

(ग) अनामिका (घ) बाणभट्ट की आत्मकथा

82. 'सैनिक', 'विशाल भारत', और 'प्रतीक' पत्रिका का सम्पादन किया–

(क) बालकृष्ण भट्ट (ख) अज्ञेय

(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) धर्मवीर भारती

83. 'विपथगा', 'परम्परा', 'कोठरी की बात' किस विधा की रचना है–

(क) आलोचना ग्रन्थ (ख) कहानी

(ग) संस्मरण (घ) उपन्यास

84. आँगन के पार द्वार, बावरा अहेरी, इत्यलम् किस कवि की रचना है–

(क) महादेवी वर्मा (ख) अज्ञेय

(ग) निराला (घ) जयशंकर प्रसाद

85. निम्नलिखित में से कौन सी अज्ञेय की रचना नहीं है?

(क) रेणुका (ख) प्रवासी के गीत

(ग) कुरुक्षेत्र (घ) परशुराम की प्रतीक्षा

86. यशपाल किस युग से सम्बन्धित हैं–

(क) शुक्लोत्तर युग (ख) द्विवेदी युग

(ग) भारतेन्दु युग (घ) शुक्ल युग

87. 'युग की गंगा' किसकी रचना है–

(क) केदारनाथ अग्रवाल (ख) अज्ञेय

(ग) बिहारी (घ) हरिवंश राय 'बच्चन'

88. 'सांध्यगीत' किसकी रचना है–

(क) महादेवी वर्मा (ख) मीराबाई

(ग) निराला (घ) प्रेमचन्द्र

89. 'विज्ञान गीता' के रचयिता हैं–

(क) केशवदास (ख) बिहारी

(ग) सेनापति (घ) मुक्तिबोध

90. रसकलश के रचयिता है–

(क) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ख) जैनेन्द्र

(ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) केशवदास

प्र0–3 निम्नलिखित गद्यांशों के नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जन का प्रवाह अनंत होता है। सहस्त्रों वर्षों से भूमि के साथ राष्ट्रीय जन ने तादात्म्य प्राप्त किया है। जब तक सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रातःकाल भुवन को अमृत से भर देती है तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर है। इतिहास के अनेक उतार–चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नयी उठती लहरों से आगे बढ़ने के लिए अजर–अमर है। जन का सततवाही जीवन नदी के प्रवाह की तरह है, जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक के नाम लिखिए।

ख) भूमि के साथ राष्ट्रीय जन का जीवन कब तक अमर है?

ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

घ) राष्ट्रीय जन का जीवन कब तक अमर है?

ड़) जन का सतत प्रवाही जीवन किसके समान है?

2. धरती माता की कोख में जो अमूल्य निधियाँ भरी है जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उससे कौन परिचित न होना चाहेगा? लाखों–

करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन–रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस–पीस कर अगणित प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारी भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सबकी जाँच पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) धरती वसुन्धरा क्यों कहलाती है?

घ) पृथ्वी की देह को किसने किससे सजाया है?

ड़) भावी आर्थिक अभ्युदय हेतु हमें क्या करना चाहिए?

3. अकर्म का आशय कर्म का अभाव नहीं, कर्त्तव्य का क्षय है। 'मैं यह कर रहा हूँ, मैं वह करने वाला हूँ, यह सब कुछ करके छोड़ूँगा।' आदि–आदि, अंहकारों से किया गया कर्म, यदि सिद्धि और सफलता न लाये बल्कि बंधन और क्लेश उपजाये, तो इसमें तर्क की कोई असंगति नहीं। पुरूषार्थ का अर्थ मेहनत नहीं है, सहयोग भी है। अंह के बल पर चलने से यह सहयोग क्षीण होता है। तब उसको पुरूषार्थ भी क्या कहना?

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) लेखक के अनुसार पुरूषार्थ का अर्थ बताइए।

घ) अहं के बल पर चलने से क्या क्षीण होता है।

ड़) अहंकार से कृत कर्म का परिणाम क्या होता है?

4. इच्छाएँ नाना है और नानाविध है और वे उसे प्रवृत्त रखती है। उस प्रवृत्ति और निवृत्ति का चक्र उसको द्वन्द्व से थका मारता है। इस संसार को अभी राग–भाव से वह चाहता है कि अगले क्षण उतने ही विराग भाव से वह उसका विनाश चाहता है। पर राग–द्वेष की वासनाओं से अंत में झुझलाहट और छटपटाहट ही उसे हाथ आती है। ऐसी अवस्था में उसका यह सच्चा भाग्योदय कहलायेगा अगर वह नत–भ्रम होकर भाग्य को सिर आँखों पर लेगा और प्राप्त कर्त्तव्य में ही अपने पुरूषार्थ की इति मानेगा।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) इस संसार में मनुष्य राग–विराग से क्या चाहता है?

घ) राग–द्वेष की वासनाओं से अन्त में मानव को क्या मिलता है?

ङ) मानव का सच्चा भाग्योदय कब कहलाएगा?

5. यह अनुभव कितना चमत्कारी है कि यहाँ जो जितनी अधिक बूढ़ी वह उतनी ही अधिक उत्फुल, मुस्कानमयी है। यह किस दीपक की जोत है? जागरूक जीवन की! लक्ष्यदर्शा जीवन की! सेवा निरत जीवन की! अपने विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन की। भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) लेखक का मदर से मिलने का अनुभव कैसा था?

घ) बूढ़ी मदर कैसी थी उसका चेहरा कैसा था? लेखक ने उसे क्या कहा है?

ड़) 'विश्वासों के साथ एकाग्र जीवन' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

6. आज जिसे हम बहुमूल्य संस्कृति मान रहे है, वह क्या ऐसी ही बनी रहेगी? सम्राटों–सामन्तों ने जिस आचार–निष्ठा को इतना मोहक और मादक रूप दिया था, वह लुप्त हो गयी, धर्माचार्यों ने जिस ज्ञान और वैराग्य को इतना महार्घ समझा था, वह लुप्त हो गया, मध्ययुग के मुसलमान रईसों के अनुकरण पर जो रस–राशि उमड़ी थी, वह वाष्प की भाँति उड़ गई, क्या वह मध्ययुग के कंकाल पर लिखा हुआ व्यावसायिक–युग का कमल ऐसा ही बना रहेगा? महाकाल के प्रत्येक पदाघात में धरती धसकेगी। <u>उसके कुंठनृत्य की प्रत्येक चारिका कुछ न कुछ लपेटकर ले जाएगी। सब बदलेगा, सब विकृत होगा–सब नवीन बनेगा।</u>

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) सम्राटों और सामन्तों की आचार निष्ठा कहाँ गयी?

घ) धर्माचार्यों का ज्ञान एवं वैराग्य क्यों लुप्त हो गया?

ड़) महाकाल के पदाघात से धरती का क्या होगा?

7. लेकिन पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुन्दर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। <u>वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के मुहूर्त तक का हिसाब लगा लेते हैं।</u> मेरी दृष्टि इतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्यामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) पुष्पित अशोक को देखकर लेखक का मन कैसा हो जाता है?

घ) लेखक के मन के उदास होने के कारण को कौन जानते होंगे?

ड़) लेखक कितना अनुमान लगा सकता है?

8. रवीन्द्रनाथ ने इस भारतवर्ष को 'महामानवसमुद्र' कहा जाता है! विचित्र देश है वह! असुर आए, आर्य आए, शक आए, हूण आए, यक्ष आए, गंधर्व आए – न जाने कितनी मानव जातियाँ यहाँ आईं और आज के भारतवर्ष को बनाने में अपना हाथ लगा गई। जिसे हम हिन्दू रीति–नीति कहते हैं, वे अनेक आर्य और आर्येत्तर उपादानों का अद्भुत मिश्रण है। एक–एक पशु, एक–एक पक्षी न जाने कितनी स्मृतियों का भार लेकर हमारे सामने उपस्थित हैं। अशोक की भी अपनी स्मृति–परम्परा है।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) भारत में कितनी जातियाँ आईं?

घ) हिन्दू रीति–नीति किन उपादानों का मिश्रण है?

ड़) पशु–पक्षी किनका भार लेकर हमारे सामने उपस्थित हैं?

9. जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के भरण–पोषण की, उसके शिक्षण की जिससे वह समाज के एक जिम्मेदार घटक के नाते अपनाप योगदान करते हुए अपने विकास में समर्थ हो सके, उसके लिए स्वस्थ एवं क्षमता की अवस्था में जीविकोपार्जन की, और यदि किसी भी कारण वह सम्भव न हो तो भरण–पोषण की तथा उचित अवकाश की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समाज की है। प्रत्येक सभ्य समाज इसका किसी न किसी

रूप में निर्वाह करता है। प्रगति के यही मुख्य मानदण्ड हैं। अतः न्यूनतम जीवन–स्तर की गारंटी, शिक्षा, जीविकोपार्जन के लिए रोजगार सामाजिक सुरक्षा और कल्याण को हमें मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकार करना होगा।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) व्यक्ति के भरण–पोषण की जिम्मेदारी किसकी है?

घ) प्रगति के मुख्य मानदण्ड क्या हैं?

ड़) हमें मूलभूत अधिकार के रूप में किसे स्वीकार करना होगा।

10. एकात्म मानव विचार भारतीय और बाह्य सभी चिंताधाराओं का सम्यक आकलन करके चलता है। उनकी शक्ति और दुर्बलताओं को भी परखता है और एक ऐसा मार्ग प्रशस्त करता है जो मानव को अब तक के उसके चिन्तन, अनुभव और उपलब्धि की मंजिल से आगे बढ़ सके।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) एकात्ममानववाद किनकी दुर्बलताओं को परखता है।

घ) एकात्ममानववाद दुर्बलताओं के साथ और किसकी परख करता है।

ड़) एकात्ममानववाद किनकी मंजिल से आगे बढ़ाएँ?

11. भाषा की साधारण इकाई शब्द है, शब्द के अभाव में भाषा का अस्तित्व ही दुरुह है। यदि भाषा में विकसनशीलता शुरू होती है तो शब्द के स्तर पर ही। दैनंदिन सामाजिक व्यवहारों में हम कई ऐसे नवीन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जो अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि विदेशी भाषाओं से उधार लिए है। वैसे ही नये शब्दों का गठन भी अनजाने में अनायास

ही होता है। ये शब्द अर्थात् उन विदेशी भाषाओं से सीधे बहिष्कृत ढंग से उधार लिए गये शब्द, भले ही काम चलाऊ माध्यम से प्रयुक्त हों, साहित्यिक–दायरे में कदापि ग्रहणीय नहीं। यदि ग्रहण करना पड़े तो उन्हें भाषा की मूल प्रकृति के अनुरुप साहित्यिक शुद्धता प्रदान करनी पड़ती है। यहाँ प्रयत्न की आवश्यकता प्रतीत होती है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) भाषा की विकसनशीलता किस स्तर से प्रारम्भ होती है?

घ) हम दैनिक व्यवहार में किन नवीन शब्दों का प्रयोग करता है?

ड़) अन्य भाषा के सीधे उधार शब्द साहित्यिक दायरे में ग्रहणीय नहीं है, क्यों?

12. विज्ञान की प्रगति के कारण नयी चीजों का निरन्तर आविष्कार होता रहता है। जब कभी नया आविष्कार होता है, उसे एक नयी संज्ञा दी जाती है। जिस देश में उसकी सृष्टि की जाती है वह देश उस आविष्कार के नामकरण के लिए नया शब्द बनता है, वही शब्द प्रायः अन्य देशों में बिना परिवर्तन के वैसे ही प्रयुक्त किया जाता है। यदि हर देश उस चीज के लिए अपना–अपना अलग नाम देता रहेगा, तो उस चीज को समझने में ही दिक्कत होगी। जैसे रेडियो, टेलीविज़न स्पुतनिक। प्रायः सभी भाषाओं में इनके लिए एक ही शब्द प्रयुक्त है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) विज्ञान की प्रगति के कारण नवीन चीजों का क्या होता रहता है?

घ) बिना परिवर्तन के किस शब्द को अन्य देश ग्रहण करते हैं?

ड़) किन शब्दों को सभी भाषाओं में समान रूप से ग्रहण किया जाता है?

13. मेरे मन में गत रात्रि के उस निन्दक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा। दोनों एक हो गये। भेद तो रात्रि के अन्धकार में ही मिटता है, दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निन्दा का ऐसा ही भेद नाशक अंधेरा होता है। तीन चार घंटे बाद, जब वह विदा हुआ, तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थीं।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) निन्दा का अंधेरा कैसा होता है?

घ) लेखक एवं अन्यों को कब शान्ति और तुष्टि मिली?

ड़) लेखक के मन में गत रात्रि के निन्दक के प्रति क्या नहीं रहा?

14. निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है।

मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं की इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों त्यों निन्दा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या द्वेष और इनसे उत्पन्न निन्दा को मारता है। इन्द्र बड़ा ईष्यालु माना जाता है क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे बनाया महल और बिन बोये फल मिले हैं। अकर्मण्यता में उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है, इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) हीनभाव ग्रसित निन्दक की तुष्टि कब और कैसे होती है?

घ) इन्द्र किसलिए ईर्ष्यालु माना जाता है?

ङ़) स्वर्ग के देवों को किनसे और क्यों ईर्ष्या होती है?

15. जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह उर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविन्द ने कहा है कि हम भी उर्जा के ही अंश है। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा है, वे एक–दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए है तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक यौ गैर आध्यात्मिक बात नहीं है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) महर्षि अरविन्द ने क्या कहा है?

घ) आत्मा एवं पदार्थ, दोनों ही किसका हिस्सा हैं?

ङ़) किसी भी दृष्टिकोण से कौन–सी बात शर्मनाक एवं गैर आध्यात्मिक नहीं है?

16. विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों–जिन्हें–जिन्हें जी–8 के नाम से पुकारा जाता है, के लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गयी।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) विकसित देशों की समृद्धि के पीछे क्या नहीं छिपा है?

घ) जी–8 राष्ट्रों के लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी क्या किया है?

ड़) मजबूत एवं समृद्धि देश के लोग कैसा जीवन बिताते हैं?

प्र0–4. निम्नलिखित पद्यांशों के नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मारग प्रेम को को समुझै 'हरिश्चन्द्र' यथारत होत यथा है।
लाभ कछु न पुकारन में बदनाम ही होन की सारी कथा है।
जानत है जिय मेरौ भली विधि औरु उपाइ सबै विरथा है।
बावरे है ब्रज के सिगरे मोहिं नाहक पूछत कौन बिथा है।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) बदनाम होने की सम्पूर्ण कथा क्या है?

घ) कवि का ह्दय भली–भाँति क्या जानता है?

ड़) कौन बावले हैं और क्या पूछते हैं?

2. मनु जुग पच्छ प्रत्च्छ होत मिटि जात जमुन जल।
कै तारागन ठगन लुकत प्रगटत ससि अबिकल।।
कै कालिंदी नीर तरंग जितो उपजावत।
तितनो ही धरि रुप मिलन हित तासों धावत।।
कै बहुत रजत चकई चलत कै फुहार जल उच्छरत।
कै निसिपति मल्ल अनेक बिधि उठि बैठत कसरत करत।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) कवि को चन्द्रमा कैसा प्रतीत हो रहा है?

घ) कालिन्दी जल में तरंगों में कौन दिखाई पड़ रहा है?

ड़) जल में फुहार क्यों और कैसी उठ रही है?

3. भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की,
सुधि ब्रज–गॉवनि मैं पावन जबै लगीं।
कहै 'रत्नाकर' गुवालिनि की झौरि–झौरि
दौरि–दौरि नंद–पौरि आवन तबै लगीं।।
उझकि–उझकि पद कंजनि के पंजनि पै
पेखि पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगीं।।
हमकों लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा,
हमकों लिख्यौ है कहा कहन सबै लगै।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) पद्यांश के अनुसार ग्वालिनें कहाँ आने लगीं?

घ) ग्वालिनें उचक–उचक कर क्या देख रही हैं?

ड़) सभी ग्वालिनें क्या कह रही हैं?

4. कान्ह–दूत कैधौं ब्रह्म–दूत हवै पधारे आप
धारे प्रन फेरन कौ मति ब्रजवारी की।
कहै 'रतनाकर' पै प्रीति रीति जानत ना
ठानत अनीति आनि रीति लै अनारी की।।
मान्यौ हम, कान्ह ब्रह्म एक ही, कह्यौ जो तुम
तौहूँ हमें भावति न भावना अन्यारी की।।

जैहे बनि बिगरि न वारिधिता बारिधि की

बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) उद्धव जी मथुरा क्यों आए थे? वे किसके दूत थे?

घ) वे किसकी रीति ले क्या ठान रहे है?

ड़) उद्धव जी कृष्ण एवं ब्रह्म के विषय में क्या कह रहे हैं?

5. प्रेम–मद–छाके पग परत कहाँ के कहाँ

थाके अंग नैननि सिथिलता सुहाई है।

कहै 'रतनाकर' यौं आवत चकात उधौ

मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है।।

धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं

सारत वँहोलिनि जो आस–अधिकाई है।।

एक कर राजै नवनीत जसुदा कौ दियौ

एक कर बंसी बर राधिका पठाई है।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) प्रेम मदपान करके उद्धव की क्या दशा हुई?

घ) उद्धव जी के नेत्र एवं अंगों का वर्णन कीजिए।

ड़) उद्धव जी के दोनों हाथों में क्या–क्या वस्तुएँ हैं?

6. बैठी खिन्ना थक दिवस वे गेह में थीं अकेली।

आके आँसू दृग–युगल में थे धरा को भिगोते।
आई धीरे इस सदन में पुष्प–सदगंध को ले।
प्रातः वाली सुपवन इसी काल वातयानों से।।

संतापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो।
धीरे बोलीं सदुख उससे श्रीमती राधिका यों।
प्यारी प्रातः पवन क्यों मुझे है सताती।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) घर में खिन्न अकेली कौन बैठी थी?

घ) वातायन से कौन आई?

ड़) श्रीमती राधिका किससे क्या बोलीं?

7. लज्जाशीला पथिक महिला जो कहीं दृष्टि आये।
होने देना विकृत–वसना तो न तू सुन्दरी को।
जो थोड़ी भी भ्रमित वह हो गोद ले श्रान्ति खोना।
होठों की औ कमल–मुख की म्लानतायें मिटाना।।
कोई क्लान्ता कृषक ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे धीरे कृषक ललना खेत में जो दिखावे।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना, तप्त भूतांगना को।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) वह लज्जाशील पथिक महिला के विषय में क्या कहती है?

घ) वह किसे गोद में लेकर क्या करने की बात कह रही है?

ड़) वह कृषक ललना के लिए क्या करने को कहती है?

8. "यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।"
चौंके सब सुनकर अटल कैकेयी स्वर को।
सबने रानी की ओर अचानक देखा,
वैधव्य तुषारवृता यथा विधु–लेखा।
बैठी थी अचल तथापि असंख्यतरंगा,
<u>वह सिंही अब भी हहा! गोमुखी गंगा!</u>

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) 'यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।' यह कथन किसका है?

घ) कैकेयी कौन थी? उसकी ओर अचानक सबने क्यों देखा?

ड़) विधवा कैकेयी कैसी प्रतीत हो रही थी?

9. निज जन्म जन्म में सुने जीव यह मेरा–
'धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।'–"
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई,
जिस जननी ने है जना भरत सा भाई।"
पागल–सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई–
<u>सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"</u>

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) किसको महास्वार्थ ने घेरा था?

घ) सौ जन्मों तक किसका जीव क्या सुने?

ड़) प्रभु के साथ कौन किस प्रकार चिल्लाई?

10. निरख सखी, ये खंजन आये,
फेरे उन मेरे रंजन ने, नयन इधर मन भाये!
फैला उनके तन का आतप, मन से सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये!
करके ध्यान आज इस जन का निश्चय वे मुसकाये,
फूल उठे हैं कमल, अधर से यह बन्धूक सुहाये!
स्वागत, स्वागत, शरद, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ ने मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्घ्य भर लाये।।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) इस पद्यांश में कौन किससे क्या कह रही है?

घ) कौन इस ओर घूमे और उसका परिणाम क्या हुआ?

ड़) इस जन का ध्यान करके मुस्कराने का क्या फल हुआ है?

11. बीती विभावरी जाग री।
अम्बर पनघट में डुबो रही–
तारा–घट ऊषा–नागरी।
खग–कुल कुल–कुल सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,

लो यह लतिका भी भर लायी–

मधु–मुकुल नवल–रस गागरी।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) क्या बीत गया और कौन जाने?

घ) कौन बोल रहा और किसका अंचल डोल रहा है?

ड़) अम्बर–पनघट में कौन सा अलंकार है?

12. मसृण गांधार देश के, नील

रोम वाले मेषों के चर्म,

ढक रहे थे उसका वपु कान्त

बन रहा था वह कोमल वर्म।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) रोमिल चर्म किसकी थी?

घ) वह पशु किस देश में पैदा होता है?

ड़) किसका शरीर कोमल कवच से ढका हुआ था?

13. दुःख की पिछली रजनी बीच

विकसता सुख का नवल प्रभात,

एक परदा यह झीना नील

छिपाये है जिसमें सुख–गात।

जिसे तुम समझे हो अभिशाप

जगत की ज्वालाओं का मूल,
ईश का वह रहस्य वरदान
कभी मत इसको जाओ भूल।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) सुख अपना शरीर सिमें छिपाये हुए है?

घ) यहाँ तुम किसके लिए प्रयुक्त है?

ड़) यह किसका कैसा वरदान है?

14. अरे वर्ष के हर्ष!
बरस तू बरस–बरस रसधार!
पार ले चल तू मुझको
बहा, दिखा मुझको भी निज
गर्जन भैरव संसार।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) कवि बादल को किस रुप में देख रहा है?

घ) कवि बादल से किसके पार ले जाने की प्रार्थना कर रहा है?

ड़) 'बरस तू बरस–बरस रसधार' से कवि का क्या अभिप्राय है?

15. दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सन्ध्या सुन्दरी परी–सी

धीरे–धीरे–धीरे।

तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर–मधुर है दोनों उसके अधर–

किन्तु जरा गम्भीर, नहीं है उनमें हास विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक

गुँधा हुआ उन घुँघराले काले काले बालों से

हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) आसमान से कौन कैसे उतर रही थी?

घ) तिमिर में किसका आभास न था?

ड़) किसके दोनों ओष्ठ कैसे हैं? उन पर किसका नामोनिशान नहीं है और क्यों?

16. ज्यों ज्यों लगती नाव पार

उर में आलोकित शत विचार।

इस धारा सा ही जग का क्रम, शाश्वत् इस जीवन का उद्‌गम,

शाश्वत है गति, शाश्वत् संगम!

शाश्वत् नभ का नीला विकास, शाश्वत् शशि का यह रजत ह्रास,

शाश्वत् लघु लहरों का विलास!

हे जग जीवन के कर्णधार! चिर जन्म मरण के आर पार,

शाश्वत् जीवन नौका विहार!

मैं भूल गया अस्तित्व ज्ञान, जीवन का यह शाश्वत् प्रमाण

करता मुझको अमरत्व दान!

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) जैसे–जैसे नाव पार लग रही थीं तो किसके डर में कितने विचार आ रहे थे?

घ) कवि किन–किन को शाश्वत मान रहा है?

ड़) जीवन की शाश्वतता कवि को क्या प्रदान कर रही थी?

17. अहे निष्ठुर परिवर्तन!
तुम्हारा ही तांडव नर्तन
विश्व का करुण विवर्तन!
तुम्हारा ही नयनोन्मीलन,
निखिल उत्थान, पतन!
अहे वासुकि सहस्रफन!
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिह्न निरन्तर
छोड़ रहे हैं जग के विक्षत वक्षः स्थल पर!
शत शत फेनोच्छ्वसित, स्फीत फूत्कार भयंकर
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर
मृत्यु तुम्हारा गरल दंत, कंचुक कल्पातर अखिल विश्व ही विवर
वक्र कुण्डल दिग्मंडल।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) कवि परिवर्तन को कैसा बता रहा है?

घ) ताण्डव नर्तन का क्या परिणाम होता है?

ड़) पृथ्वी और आकाश को कौन घुमा रहा है।

18. सुख भोग खोजने आते सब,
आये तुम करने सत्य–खोज,
जग की मिट्टी के पुतले जन
तुम आत्मा के, मन के मनोज!
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर
चेतना, अहिंसा, नम्र ओज,
पशुता का पंकज बना दिया
तुमने मानवता का सरोज!

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) सब लोग संसार में क्या खोजने आते हैं?

घ) गांधी जी आप इस जगत में क्या खोजने आये हैं?

ड़) जग जनों और गाँधी जी में क्या अन्तर था? स्पष्ट कीजिए।

19. मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पन्दन में चिर–निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
    नयनों में दीपक से जलते
    पलकों में निर्झरिणी मचली!
मेरा पग पग संगीत भरा,
श्वासों में स्वप्न पराग झरा,

नभ के नव रंग बुनते दुकूल

छाया में मलय–बयार पली!

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) कवयित्री किसके लिए व्याकुल है?

घ) कवयित्री की आँखों में किसके दीप चल रहे हैं?

ड़) 'छाया में मलय बयार पली' का आशय स्पष्ट कीजिए।

20. बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बन्धन सजीले?

पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?

विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,

क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस–गीले?

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!

जाग तुझको दूर जाना!

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) हे मन! बता क्या तुझे ये सांसारिक बन्धन बाँध लेंगे?

घ) बासन्ती–मधुपों की गुनगुनाहट किसे भुला सकेगी?

ड़) पुष्प के ओस गीले दल तेरे लिए क्या करेंगे?

21. मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,

उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।

अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ।
<u>बादलों के सीस पर स्पन्दन चलाता हूँ।</u>

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) नश्वर मानव की विजय का सूर्य कौन है?

घ) किसने अपने आप को अपने समय का सूर्य कहा है?

ड़) पुरुरवा पावक जलाकर क्या करता है?

22. सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान,
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
<u>खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,</u>
<u>काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।</u>

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) मनुष्य विज्ञान की तलवार को कहाँ क्या तलकर फेंक दे?

घ) मानव के विषय में क्या सिद्ध हो चुका है?

ड़) मनुष्य को किसकी पहचान नहीं है?

23. एक दिन सहसा
सूरज निकला
अरे क्षितिज पर नहीं
नगर के चौक;

धूप बरसी

पर अन्तरिक्ष से नहीं

फटी मिट्‌टी से।

क) प्रस्तुत पद्यांश के पाठ एवं कवि का नाम लिखिए।

ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

ग) एक दिन अचानक क्या हुआ?

घ) क्षितिज पर नहीं कहाँ क्या हुआ?

ड़) 'धूप बरसी' का क्या तात्पर्य है?

प्र0–5 निम्नांकित लेखकों का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

(क) (1) वासुदेवशरण अग्रवाल (2) जैनेन्द्र कुमार

(3) कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर' (4) डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

(5) पं0 दीनदयाल उपाध्याय (6) प्रो0 जी0 सुन्दर रेड्‌डी

(7) हरिशंकर परसाई (8) डॉ0 ए0पी0जे अब्दुल कलाम

(ख) निम्नांकित कवियों का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर प्रकाश डालिए।

(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (2) जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

(3) अयोध्या सिंह उपाध्याय (4) जयशंकर प्रसाद

(5) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (6) सुमित्रानन्दन पंत

(7) रामधारी सिंह 'दिनकर' (8) अज्ञेय।

प्र0–6 निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए–

1. जैनेन्द्र कुमार लिखित 'ध्रुवयात्रा' कहानी का सारांश लिखिए।

2. ध्रुवयात्रा कहानी के आधार पर राजा रिपुदमन बहादुर का चरित्र–चित्रण कीजिए।
3. कहानी तत्वों के आधार पर 'ध्रुवयात्रा' कहानी की समीक्षा कीजिए।
4. 'खून का रिश्ता' कहानी का सारांश संक्षेप में लिखिए।
5. 'खून का रिश्ता' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।
6. कहानी कला की दृष्टि से 'पंचलाइट' कहानी की समीक्षा कीजिए।
7. पंचलाइट कहानी के नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए।
8. कहानी कला की दृष्टि से 'लाटी' कहानी की समीक्षा कीजिए।
9. 'लाटी' कहानी के आधार पर लाटी का चरित्रांकन संक्षेप में कीजिए।
10. बहादुर कहानी की समीक्षा एवं प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।
11. 'कर्मनाशा की हार' कहानी की कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।
12. 'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

प्र0–7 निम्नलिखित खण्डकाव्यों में से स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए।

(क) i) 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य की प्रमुख घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

ii) 'श्रवण कुमार' खण्डकाव्य के आधार पर दशरथ का चरित्र–चित्रण कीजिए।

<u>अथवा</u>

(ख) i) खण्डकाव्य की दृष्टि से 'मुक्तियज्ञ' की समीक्षा कीजिए।

ii) 'मुक्तियज्ञ' के नायक का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

(ग) i) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

ii) दौपद्वी का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

(घ) i) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु का संक्षेप में विवेचन कीजिए।

ii) 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र–चित्रण लिखिए।

अथवा

(ड़) i) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप लिखिए।

ii) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

अथवा

(च) i) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु का संक्षेप में विवेचन कीजिए।

ii) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'राज्यश्री' का चरित्र–चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

खण्ड–ख

प्र0–8क) निम्नलिखित अवतरणों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. ततः कदाचिद् द्वारपाल आगत्य महाराजं भोजं प्राह 'देव, कौपीनावशेषो विद्वान् द्वारि वर्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति। ततः प्रविष्टः सः कवि भोजमालोक्य अद्य में दारिद्र्यनाशो भविष्यतीति मत्वा तुष्टो हर्षाश्रूणि मुमोच। राजा तमालोक्य प्राह– 'कवे, किं रोदिपि इति। ततः कविराह– राजन्! आकर्णय मद्गृहस्थिम्।

2. संस्कृतस्य साहित्यं सरसं, व्याकरणञ्च वर्तते। किं बहुना चरित्रनिर्माणार्थ यादृशी सत्प्रेरणां संस्कृतवाङ्गयं ददाति न तादृशीम् किञ्चिदयन्त्। मूलभूतानां मानवीयगुणानां यादृशी विवेचना संस्कृतसाहित्ये वर्तते नान्यत्र तादृशी। दया, दान, शौचम्, औदार्यम, अनसूया, क्षमा, अन्य चानेके गुणाः अस्य साहित्यस्य अनुशीलनेन सञ्जायन्ते।

3. संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास–भारविभवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यपि पाठकानं हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसम सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सूष्ठूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।

4. याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच–मैत्रेयि! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि। ततस्तेऽनया कात्यायन्या विच्छेदं करवाणि इति। मैत्रेयी उवाच–यदीयं सर्वा पृथ्वी वित्तेन पूर्णा स्यात् तत् किं तेनाहममृता स्यामिति। याज्ञवल्क्य उवाच–नेति।

5. यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्। अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति। सा मैत्रेयी उवाच–येनाहं नामृता स्याम् किमहं तेन कुर्याम्। यदेव भगवान् केवलममृतत्वसाधनं जानाति तदेव में ब्रूहि। याज्ञवल्क्य उवाच–प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे। एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्व–साधनम्।

6. याज्ञवल्क्य उवाच–न वा अरे मैत्रेयी! पत्यु कामाय पतिः प्रियो भवति। आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायाः कामाय

जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु वै कामाया जाया प्रिया भवति न वा अरे पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति, आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति। न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रिय भवति, आत्मनसतु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति।

तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयी। दृष्टव्यः दर्शनार्थ श्रोतव्यः, मन्तव्यः निदिध्यासितव्यश्च। आत्मनः खलु, दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति।

7. अतीतप्रथमकल्पे जनाः एकमभिरुपं सौभाग्यप्राप्तं सर्वाकारपरिपूर्ण पुरुषं राजानमकुर्वन। चतुष्पदा अपि सन्निपत्य एकं सिंहं राजानमकुर्वन्। ततः शकुनिगणाः हिमवत–प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च। आस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति! अराजको वासो नाम न वर्तते। एको राजस्थाने स्थापयितव्यः 'इति उक्तवन्तः। अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमुलूकं दृष्ट्वा अयं नो राचते' इत्यावोचन।

8. अथैकः शकुनिः सवेषां मध्यादाशयग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत्। ततः एकः काकः उत्थाय 'तिष्ठ तावत्' अस्य एतास्मिन राज्याभिषेककाले एवंरुपं मुखं, क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति! अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकितः वयं तत्प कटाहे प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र तत्रैव धङ्क्ष्यामः। ईदृशो राजा मध्यं न रोचते इत्याह–

न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम्।

अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं कुद्धो भविष्यति।।

9. हंसराजः तदैव परिषन्मध्ये आत्मनः भागिनेयाय हंसतोतकाय दुहितरमदात्। मयूरो हंसपोतिकामप्राज्य लज्जितः तस्मात् स्थानात् पलायितः। हंसराजोऽपि हृष्टमानसः स्वगृहम् अगच्छत्।

10. सौराष्टपान्ते टंकरानाम्नि ग्रामे श्रीकर्षणतिवारीनाम्नो धनाढ्यस्य औदीच्यविप्रवंशीयस्य धर्मपत्नी शिवस्य पार्वतीय भद्रमासे नवम्यां तिथि गुरुवासरे मूलनक्षत्रे एकाशीत्युत्तराष्टाद्श शततमे (1881) वैकमाब्दे पुत्ररत्नमजनयत्।

11. यदा अयं पोडशवर्षदेशायः आसीत् तदास्य कनीयसी भगिनी विषूचिकया पञ्चत्वं गता। वर्षत्रयानन्तरमस्य पितृत्योऽपि दिवगतः। द्वयोरनयोः मृत्युं दृष्ट्वा आसीदस्य मनसि–कथमहं कथंवायं लोकः मृत्युभयात मुक्तः स्यादिति चिन्तयतः एवास्य ह्रदि सहसैव वैराग्यप्रदीपः प्रज्वलितः। एकस्मिन् दिवसे अस्तंगते भगवति भास्वति मूलशंकर गृहमत्यजत्।

12. महामना विद्वान् वक्ता, धामिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत्। परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत्। यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत्। तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः, सर्वविधं ससहायञ्च अकरोत। प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत्।

13. दुर्योधनः– केशव इति। एवमेष्टव्यम। अयमेव समुदाचारः। भो भोः राजनजः! दौत्येनागस्त्य केशवस्य किं युक्तम्। किमाहुर्भवन्तः अर्ध्यप्रदानेन पूजयितव्यः केशव इति। न में रोचते। ग्रहणे अत्र अस्य हितं पश्यामि।

14. पञ्चशीलमिति शिष्टाचारविषयकाः सिद्धान्तः। महात्मा गौतमबुद्धः एतान् पञ्चाापि सिद्धान्तान पञ्चशीलभिति नाम्नपा स्वशिष्यान् शास्ति स्म। अत एवायं शब्द अधुनापि तथैव स्वीकृतः। इमे सिद्धान्तः क्रमेण एवं सन्ति– (1) अहिंसा, (2) सत्यम् (3) अस्तेयम्, (4) अप्रमाद, 5. ब्रह्मचर्यम् इति।

15. महापुरुषाः लौकिक–प्रलोभनेष बद्धाः नियत लक्ष्यान्न कदापि भ्रश्यन्ति। देवसेवानुस्क्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाश्क्नोत्। पण्डित मोतीलाल नेहरू, लाललाजपत राय प्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह

सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासंग्रामेऽवतीर्णः। देहल्यां त्रयोविशंतितमे कांग्रेसस्याधिवेशनेऽयम अध्यक्षपदमलंकृतवान्। 'रोलट एक्ट' इत्याख्यस्य विरोधेऽस्य ओजस्वितभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्याशासकाः भीताः जाताः। बहुवारं कारागरे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत्।

प्र0–8ख) निम्नलिखित संस्कृत पद्यांशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

1. अये लाजानुच्चैः पथि वचनमाकर्ण्य गृहिणी।
   शिशोः कर्णौ यत्नातू सुपिहितवती दीनवदना।।
   मयि क्षीणोपाये यदकृत दृशावश्रवहुले।
   तदन्तः शल्यं में त्वमसि पुनरुद्धतुमुचितः।।

2. विरलविरलाः स्थूलास्ताराः कलाविव सज्जनाः
   मन इव मुनेः सर्वत्रैव प्रसन्नमभून्नभः।।
   अपसरित च ध्वान्तं चित्तात्सतामिव दुर्जनः
   ब्रजति च निशा क्षिपं लक्ष्मीरनुद्यमिनामिव।।

3. मत्ता गजेन्द्रा मुदिता गवेन्द्रा वनेषु विक्रान्ततरा मृगेन्द्राः।
   रम्या नगेन्द्रा निभृता नरेन्द्राः प्रकीडितो वारिधरैः सुरेन्द्रः।।

4. वर्षप्रवेगाः विपुलाः पतन्ति प्रवान्ति वाताः समुदीर्णवेणाः।
   प्रनण्टकूलाः प्रवहन्ति शीघ्रं नद्यो जलं विप्रतिपन्नमार्गा।।

5. घनोपगूढ़ं गगनं न तारा न भास्करो दर्शनमभ्युपैति।
   नवैर्जलौघैर्धरणी वितृप्ता तमोविलिप्ता न दिशः प्रकाशाः।।

6. महान्ति कूटानि महीधराणां धाराविधौतान्यधिकं विभान्ति।
महाप्रमाणैविपुलैः प्रपातैर्मुक्ताकलापैरिव लम्वमानैः।।

7. अत्यन्त–सुख–सचारा मध्याह्ने स्पर्शतः सुखाः।
दिवसाः सुभगादित्याः छाया सलिल दुर्भगाः।।

8. प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधा काननद्रुमाः।
वायुवेगप्रचलिताः पुष्पैरवकिरन्ति ग्राम्।।

9. न में रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम्।
अक्रुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति।।

10. ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव।।

11. रेखामात्रमपि क्षुण्णादामनोर्वत्मनः परम्।
न व्यतीयुः प्रजास्तस्य नियन्तुर्नेमिवृत्तयः।।

12. आकारसदृशप्रज्ञः प्रज्ञया सदृशागमः।
आगमैः सदृशारम्भ आरम्भसदृशोदयः।।

13. प्रजानां विनयाधानाद्ध रक्षणाद भरणादपि।
स पिता पितरस्यतासां केवलं जन्महेतव।।

14. भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम्।।

15. सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद विद्यां विद्यार्थी या त्यजेत सुखम्।।

16. काव्य–शास्त्र–विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

17. जयन्ति ते महाभागा जन–सेवा–परायणाः।
जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित्।।

18. न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्द्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

19. विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्यानाय दानाय च रक्षणाय।।

20. ऋषयो राक्षसीमाहु वाचमुन्मत्तदृप्तयो।
सा योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निऋरतिः।।

21. कामान् दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं
कीर्ति सुते दुष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मारतं मंगलानां
धेनु धीराः सूनृता वाचमाहुः।।

22. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

23. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति।।

24. परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्।।

25. जलविन्दु—निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।

प्र0—9 निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिए—

1. द्वारपालः भोजं किम् अकथयत?
2. भोजं दृष्ट्ता कविः किम् अचिन्तयत्?
3. राजा भोजः कालिदास किम् कर्तुम् प्राह?
4. संस्कृत साहित्यस्य प्रमुखाः कवयः के सन्ति?
5. संस्कृत साहित्यस्य आदिकविः कः आसीत्?
6. संस्कृतस्य—साहित्यं व्याकरण च कीदृशम्?
7. संस्कृत साहित्यस्य अनुशीलनेन के गुणाः संजायन्ते?
8. संस्कृत गौरवं दृष्ट्वा दण्डिना किमुक्तम्?
9. मैत्रेयी कस्य पत्नी आसीत?
10. कः सर्वज्ञः भवति?

11. वित्तेन कस्य आशा नास्ति?

12. मैत्रेयी याज्ञवल्क्यं किम् अपृच्छत?

13. कस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति?

14. वर्षतौ निंदा विहाय के नदन्ति?

15. वर्षतौ गगनं कीदृशं भवति?

16. वसन्तकाले वृक्षाः कीदृशाः भवन्ति?

17. काननद्रमुाः गा पुष्पैः कदा अवकिरन्ति?

18. पुण्डरीकं कदा विकसति?

19. वर्षाकाले पर्वतशिखराणि कैः तुलितानि?

20. वर्षतौ सुरेन्द्रः कैः प्रकीडितः?

21. हंसपोतिका कं पतिम् अचिनोत?

22. हंसपोतिका कीदृशी आसीत्?

23. हंसपोतिका पतिरुपेण कस्य वरणम् अकरोत्?

24. चर्तुष्पदाः कम् राजानम् अकुर्वन?

25. मत्स्याः कं राजनम् अकुर्वन्?

26. शकुनिगणाः सन्निपत्य किम् व्यचारयन्?

27. अन्ते खगाः कम् नृपं अकुर्वन्?

28. जनाः कीदृशं पुरुषं राजानम् अकुर्वन?

29. हंसपोतिकायाः विवाहः केन सह अभवत्?

30. हंसराज दुहितरम् कस्मै अददात्?

31. दिलीपः गा किमर्थम् दुदोह?

32. दिलीपस्य के गुणा सन्ति?

33. दिलीपः कस्य प्रदेशस्य राजा आसीत्?

34. दिलीपः किमर्थ बलिमगृहीत?

35. रविः जलम् किमर्थम् आदत्ते?

36. महर्षिः दयानन्दः किमर्थ सर्वत्र भ्रमति स्म?

37. दयानन्दस्य गुरोः किं नामासीत्?

38. महर्षि दयानन्दस्य जन्म कस्य प्रान्तस्य कस्मिन् ग्रामे अभवत्?

39. दयानन्दस्य पिता कः आसीत्?

40. ज्ञानमय प्रदीपः केन प्रज्वालितः?

41. दयानन्दः विद्याध्ययनार्थम् कुत्र गतः?

42. मूर्खाणां कालाः कथ गच्छति?

43. किम् धनं सर्वप्रधानम्?

44. खलस्यविद्या किमर्था भवति?

45. भाषासु का मुख्या मधुरा दिव्या चास्ति?

46. कीदृशं मित्रं वर्जयेत्?

47. पुण्डरीकं कदा विकसति?

48. वीरां कस्मात् स्वपदम् न प्रविचलन्ति?

49. धीराः का धेनुम् आहुः?

50. मदनमोहनमालवीयस्य जन्म कुत्र अभवत्?

51. श्री मालवीयस्य पितुः किं नामासीत्?

52. महामना मालवीयस्य सर्वोच्च गुणः कः आसीत?

53. श्री मालवीयः वाराणस्यां कस्य संस्थापनं अकरोत्?

54. पञ्चशीलमिति कीदृशाः सिद्धान्ताः?

55. गौतम बुद्धः कान् सिद्धान्तान् अशिक्षयत्?

56. चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्रीकान् सिद्धान्तानधिकृत्य अभवत्?

57. कस्मिन काल चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री अभवत्?

58. श्रीकृष्णः दुर्योधनस्य किमपरं नाम वदति?

59. दुर्योधनः श्रीकृष्ण किम् अपृच्छत?

60. पाण्डवदूतः कः आसीत्?

61. दुर्योधनः कर्णम् किम् अवोचत्?

62. श्रीकृष्णः दूतरुपेण कुत्र गतः?

63. दुर्योधनः कस्य प्रभावेण आसनात् चालितोऽभवत्?

64. राज्य दान विषये दुर्योधनः किम् अकथयत्?

65. विद्यार्थी किं त्यजेत सुधार्थी वा किं त्यजेत्?

प्र0–10क) निम्नलिखित रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(1) श्रृंगार रस	(2) वीर रस
(3) करुण रस	(4) रौद्र रस
(5) हास्य	(6) वीभत्स रस
(7) भयानक रस	(8) अद्भुत रस
(9) शान्त रस	(10) वात्सल्य रस

प्र0–10(ख) निम्नलिखित अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

अनुप्रास, यमक, श्लेष अलंकार।

उपमा अलंकार, रुपक अलंकार, अनन्वय अलंकार, भ्रान्तिमान अलंकार, सन्देह अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार, दृष्टान्त अलंकार, अतिशयोक्ति अलंकार।

(ग) निम्नलिखित छन्द का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए।

चौपाई, रोला, हरिगीतिका, बरबै, दोहा, सोरठा, कुण्डलिया, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, मत्तगयन्द, सुन्दरी आदि।

प्र0—11 निम्नलिखित विषय पर अपनी भाषा शैली में निबन्ध लिखिए।

1. साहित्य समाज का दर्पण है।
2. हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण।
3. राष्ट्रभाषा हिन्दी।
4. भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति।
5. विद्यार्थी और अनुशासन।
6. राष्ट्र—निर्माण में युवाशक्ति का आयोजन।
7. हमारी वन—सम्पदा।
8. सड़क सुरक्षा के नियम।
9. आधुनिक जीवन की समस्याएँ।
10. कोरोना संक्रमण एवं बचाव के उपाय।
11. प्रदूषण : समस्या और समाधान।
12. राष्ट्रीय एकता।

13. इक्कीसवीं सदी का भारत।

14. मेरे सपनों का भारतवर्ष।

15. कम्प्यूटर : आधुनिक यन्त्र पुरुष।

16. दूर–संचार में क्रान्ति।

17. विज्ञान : वरदान या अभिशाप।

18. शिक्षा में खेलकूद का स्थान।

19. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

20. भ्रष्टाचार : समस्या और निराकरण।

प्र0–12क) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. 'नयनम्' का सन्धि–विच्छेद होगा–

(क) नय + अनम् (ख) नी + अनम्

(ग) ने + अनम् (घ) नै + अनम्

2. 'पावकः' का सन्धि विच्छेद होगा–

(क) पौ + अकः (ख) पो + अकः

(ग) पाव् + अकः (घ) पा + वकः

3. 'भवनम्' का सन्धि विच्छेद होगा–

(क) भव + अनम् (ख) भो + अनम्

(ग) भू + अनम् (घ) भौ + अनम्

4. 'प्रेजते' का सन्धि–विच्छेद होगा–

(क) प्र + इजते (ख) प्रे + अजते

(ग) प्र + एजते (घ) प्र + ऐजते

5. 'भावुकः' का सन्धि विच्छेद होगा–

(क) भौ + उकः (ख) भो + उकः

(ग) भव + उकः (घ) भावे + उकः

6. उपोषति का सन्धि–विच्छेद होगा–

(क) उपो + षति (ख) उपोष + इति

(ग) उ + पोषति (घ) उप + ओषति

7. 'विष्णोऽव' में निहित संधि सूत्र है–

(क) एङिपररुपम (ख) एङपदान्तादति

(ग) एचोऽयवायाव (घ) स्तोःश्चुनाश्चुः

8. 'आपात्काल' का संधि सूत्र है–

(क) एङपदान्तादति (ख) मोऽनुस्वार

(ग) खरि च (घ) झलां जश् झशि

9. सज्जन का संधि–विच्छेद है–

(क) सद् + जनः (ख) सज् + जनः

(ग) सत् + जनः (घ) सज्ज + जनः

10. गायक का संधि–विच्छेद है–

(क) गाय + अकः (ख) गा + यक

(ग) गै + अकः (घ) गै + कः

प्र0–12ख) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प लिखिए–

1. 'यथाशक्ति' में समास है–

(क) अव्ययीभाव (ख) कर्मधारय

(ग) दिगु समास (घ) बहुब्रीहि समास

2. 'प्रतिदिनम्' में समास है–

(क) दिगु समास (ख) अव्ययीभाव समास

(ग) कर्मधारय (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. 'आजन्म' में समास है–

(क) कर्मधारय (ख) अव्ययीभाव समास

(ग) बहुव्रीहि (घ) दिगु समास

4. 'पीतपृष्ठम्' में समास है–

(क) कर्मधारय (ख) दिगु

(ग) अव्ययीभाव (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. 'कृष्णसर्पः' में समास है–

(क) अव्ययीभाव (ख) कर्मधारय

(ग) दिगु (घ) इनमें से कोई नहीं।

6. 'कमलमुख' में समास है–

(क) दिगु (ख) कर्मधारय

(ग) बहुव्रीहि (घ) अव्ययीभाव

7. 'श्वेताम्बरा' में समास है–

(क) कर्मधारय (ख) बहुव्रीहि

(ग) दिगु (घ) इनमें से कोई नहीं।

8. 'दशाननः' में समास है–

(क) बहुव्रीहि (ख) कर्मधारय

(ग) दिगु (घ) अव्ययीभाव

9. 'महात्मा' में समास है–

(क) कर्मधारय (ख) बहुव्रीहि

(ग) दिगु (घ) इनमें से कोई नहीं।

10. 'चतुराननः' में समास है–

(क) बहुव्रीहि (ख) दिगु

(ग) कर्मधारय (घ) इनमें से कोई नहीं।

प्र0–13क) निम्नलिखित प्रश्नों में दिये गये विकल्पों में सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1. 'तिष्ठेव' रुप है 'स्था' धातु का–

(क) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (ख) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

(ग) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

2. 'स्था' धातु, लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होगा–

(क) तिष्ठन्तु (ख) तिष्ठ

(ग) तिष्ठाम् (घ) तिष्ठम्

प्र0–13ख) 'नयनम्' रुप है 'नी' धातु का–

(क) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन

(ग) लृट लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन

1. 'अनयः' रुप है 'नी' धातु का–

(क) लृट लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

2. 'कुरुथः' रुप है 'कृ' धातु का–

(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन

(ग) लृट लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन

3. 'अपिबतम्' रुप है 'पा' धातु का–

(क) लृट लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

4. 'चुर' धातु लोट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन का रूप होगा–

(क) चोरपथः (ख) चोरयेम

(ग) चोरयाव (घ) चोरयामि

प्र0–13ग) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. 'पठनीयः' शब्द में प्रत्यय है–

(i) त्वयत् (ii) अनीयर

(iii) नत्वा (iv) तल्

2. 'कर्तव्यः' शब्द में प्रत्यय है–

(i) अनीयर (ii) त्वयत्

(iii) त्व (iv) क्त्वा

3. 'गमनीयः' शब्द में प्रत्यय है–

(i) नत्वा (ii) तल्

(iii) अनीयर (iv) तव्यत

4. 'महता' शब्द में प्रत्यय है–

(i) तल् (ii) अनीयर

(iii) 'मतुप्' (iv) तव्यत्

5. 'गन्तव्यः' शब्द में प्रत्यय है–

(i) तव्यत् (ii) अनीयर

(iii) त्व (iv) क्त्वा

प्र0–13घ) निम्नलिखित रेखांकित पदों में प्रयुक्त विभक्तियों के सूत्र बताइए–?

1. <u>कृष्णं</u> परितः गावः सन्ति।

2. <u>ग्रामम्</u> परितः क्षेत्राणि।

3. <u>विद्यालयं</u> परितः।

4. विद्यालयं निकषा।

5. विद्यालयं समया।

6. हा! दुर्जनम्।

7. सीता भवनम् प्रति गच्छति।

8. कर्णेन वधिरः।

9. भिक्षुकः पादेन खञ्जः अस्ति।

10. श्रीगणेशाय नमः।

प्र0–14 निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

1. मैं, तुम और कृष्ण विद्यालय जाते हैं।
2. सीता और राधा नाचती है।
3. गाँव के चारों ओर वृक्ष हैं।
4. गाँव के समीप विद्यालय है।
5. विद्या धर्म की ओर जाती है।
6. धर्म के बिना मोक्ष नहीं मिलता।
7. गाय से दूध दुहता है।
8. राजा से धन माँगता है।
9. गुरु से प्रश्न पूछता है।
10. पिता पुत्र को धर्म समझाता है।
11. वानर वृक्ष पर चढ़ता है।
12. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।
13. पुस्तकों में गीता प्रमुख है।
14. वह पुस्तक सुन्दर है।

15. यह फल किस बालक का है।
16. सूर्य के निकलने पर कमल खिलता है।
17. चार ब्राह्मण कन्नौज गये।
18. तुम कब प्रयाग जाओगे।
19. मैं कभी काशी नहीं गया।
20. हमें अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए।
21. मेरे घर के सामने उद्यान है।
22. विनम्रता सदाचार से उत्पन्न होती है।
23. हमारे घर के चारों ओर आम के पेड़ हैं।
24. आकाश का घर कहाँ है?
25. मेरी माता गृहकार्य में अति निपुण है।

*****